शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

**सम्पादकीय**

# साहित्य और जीवन

## काका कालेलकर

'साहित्य और जीवन' बड़े महत्व का है, क्योंकि जीवन के उत्कट अनुभव और चिंतन से ही साहित्य की रचना होती है और साहित्य का असर भी जीवन पर कम नहीं होता। असली चीज है जीवन। उसके अनेक प्रतिबिम्ब साहित्य में पाए जाते हैं। जीवन में से साहित्य की निर्मिति होती हैं साथ-साथ यह भी देखा गया है कि साहित्य से जीवन को लोकोत्तर प्रेरणा मिलती है। साहित्य का महत्व इसलिए है कि साहित्य के द्वारा हम दूर-दूर के अपने समकालीनों से बात कर सकते हैं। एक तरह से जीवन-विनिमय भी कर सकते हैं। दिशा का अंतर तोड़ने की साहित्य की शक्ति अद्भुत है और दूसरी ओर प्राचीन काल के ऋषि-मुनि, बड़े-बड़े कवि और पुरुषार्थी लोग अपने साहित्य के द्वारा हमसे बातचीत कर सकते हैं। वेद पढ़ते समय वैदिक ऋषियों की भावना के साथ मैं तन्मय हो सकता हूं और हमें विश्वास है कि आगे आने वाले असंख्य प्रश्नों के साथ साहित्य से हम अपना संबंध बांध सकते हैं। एक तरफ से दिशा का अंतर तोड़ना और अंतर तोड़कर भी मानव हृदय को जोड़ना यह क्रिया साहित्य ही कर सकता है और इस तरह समस्त मानव जाति का हृदय एक है ऐसा हम अनुभव करते हैं। साहित्य के सेवन से यह एकता उत्कट भी होती है। साहित्य अनेक प्रकार का होता है। प्रभावशाली साहित्य में भी सज्जनता, दुर्जनता, दोनों हो सकती है। दुर्जन साहित्य मनुष्य-मनुष्य के बीच अनबन, द्वेष और वैमनस्य पैदा कर सकता है, कल्पना शक्ति को विकृत कर सकता है। साहित्य के द्वारा जो परस्पर अविश्वास, अनबन और द्वेष पैदा होते हैं, पुश्त-दर-पुश्त अपना काम करते ही हैं। इसलिए साहित्य-सर्जक को मानव कल्याण का ध्यान करके ही सर्जन के लिए प्रवृत्त होना चाहिए। जो साहित्य ह्मारे चिंतन को अजरामर कर सक्ता है, भविष्य के मानव के मन को शुभ और प्राणदायी प्रेरणा दे सकता है, उसका दुरुपयोग कभी भी नहीं करना चाहिए नहीं तो वह शाप का रूप होगा। साहित्य का सर्वश्रेष्ठ रूप तो काव्य है। साहित्य में हमारा इतिहास, हमारी भावनाएं, हमारा पुरुषार्थ और हमारी ज्ञानोपासना सब कुछ हम संग्रहीत कर सकते हैं। मानव जाति के लिए अजरामर बनने के लिए दो चार उपाय हैं : प्रजोत्पत्ति करके मनुष्य अपनी वंश परंपरा चलाता है। बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी करके अथवा गांव और नगर की रचना करके मनुष्य अपने पुरुषार्थ को और भावना को भविष्य के लिए, मनुष्य के लिए अर्पण कर सकता है। निबंधों के द्वारा मनुष्य अपना चिंतन, ज्ञानोपासना, अनुभव और इतिहास सबके लिए देता है। जैसा जीवन हम जीते हैं उसके सारे पहलू तो उपन्यासों के अंदर ही व्यक्त होते हैं। उपन्यास की घटनाएं काल्पनिक अथवा कल्पना मिश्रित होती हैं। लेकिन इसके अंदर जो जीवन प्रतिबिम्बित होता है। वह तो ठोस सत्य स्वरूप ही होता है।

- **काका कालेलकर ग्रंथावली खण्ड 9**